चयनित महाकाव्यों में नारी सशक्तीकरण
का अध्ययन

संस्कृत विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की
प्रस्तावित रूपरेखा

2018

निर्देशिका

डॉ. निशीथ गौड़
अिस.प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.दयालबाग, आगरा

शोधार्थिनी

वर्षा रानी
एम.ए. संस्कृत

अध्ययन क्षेत्र – संस्कृत साहित्य

विभागाध्यक्ष

प्रो. अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग, कला संकाय,

संकाय प्रमुख

प्रो. जे.के. वर्मा
कला संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा–282005

चयनित महाकाव्यों में नारी सशक्तीकरण

का अध्ययन

परिचय

संसार की सभी परिष्कृत भाषाओं में संस्कृत ही सबसे प्राचीन भाषा है। इसका दूसरा नाम देववाणी है। वेदों के रहस्यमय ज्ञान से लेकर साधारण जन–जीवन के मनोरंजन से संबंधित पंचतंत्र की कथाओं तक जितना भी साहित्य आज उपलब्ध है, वह सब संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। देव भाषा में प्रकृति–प्रत्यय विभाग द्वारा, प्रत्येक शब्द को मध्य से विभक्त कर शब्दोपकोश तथा अध्ययन की सरल प्रक्रिया का निर्माण किया। इसी प्रकृति–प्रत्ययादि विभाग के पुनः संस्कार द्वारा संस्कृत होने से देववाणी का नाम संस्कृत पड़ा। बाद में वाल्मीकि, पाणिनी, भरत और दण्डी जैसे संस्कृत के प्राणभूत कवियों, वैयाकरणों और आचार्यों ने संस्कृत का प्रयोग इसी दृष्टि कोण को ध्यान में रखकर किया है।

भारतीय संस्कृत परम्परा ने काव्य को दो रूपों में बांटा है श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। महाकाव्य श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत प्रबन्ध काव्य का प्रथम भेद है। कोई भी काव्य मात्र अपनी 'वृहदाकृतिवश' ही 'महा' 'संज्ञा से संपृक्त नहीं हो जाता है। महाकाव्य की महत्ता स्वरूपजन्य होने के साथ–साथ गुण जन्य भी है । शास्त्रीय दृष्टि से महाकाव्य होते हुए भी उसे कुछ विशिष्ट लक्षणों में आबद्ध होना आवश्यक है। रामायण एवं महाभारत में महाकाव्य विषयक मान्यता यद्यपि स्थिर हो चुकी थी, तथापि महाकाव्य के शास्त्रीय स्वरूप का वर्णन करने का श्रेय सर्वप्रथम 'भामह' को जाता है–दण्डी, रूद्रट, भोजदेव, हेमचन्द्र, विश्वनाथ आदि इनके परवर्ती हैं । इसमें किसी ऐतिहासिक या पौराणिक पुरूष की सम्पूर्ण जीवन कथा का आद्योपांत वर्णन होता है। महाकाव्य में ये बातें होना आवश्यक है–

- महाकाव्य का नायक कोई पौराणिक या ऐतिहासिक हो और उसका धीरोदात्त होना आवश्यक है।
- जीवन की सम्पूर्ण कथा का सविस्तार वर्णन होना चाहिए।

- श्रृंगार, वीर, शांत रस में से किसी एक रस की प्रधानता होनी चाहिए यथास्थान अन्य रसों का भी प्रयोग होना चाहिए।
- उसमें सुबह–शाम, दिन–रात, नदी–नाले, वन–पर्वत–समुद्र आदि प्राकृतिक दृश्यों का स्वाभाविक चित्रण होना चाहिए।
- 8 या 8 से अधिक सर्ग होने चाहिए, प्रत्येक सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन होना चाहिए तथा सर्ग के अंत में अगले अंक की सूचना भी होनी चाहिए ।

सर्गबन्धो महाकाव्यं महतां च महच्चयत्।

अग्राम्यांशब्दमर्थ्यञ्च सालङ्कारं सदाश्रयम् ।।

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैश्चयत्।

पञ्चभिर्सन्धिभिर्युक्तं नातिव्याख्येवमृद्धिमत् ।।

चतुर्वर्गाभिधानेऽपि भूयसार्थोपदेशकृत्।

युक्तं लोकसवभावेन रसैश्च सकलैः पृथकः।।

नायकं प्रागुपन्यस्य वंशवीर्यश्रुतादिभिः।

न तस्यैव वधं ब्रूयादन्योत्कर्षभिधित्सया।।

यदि काव्यशरीरस्य न स व्यापितयेष्यते ।

न चाभ्युदय भाक् तस्य मुधादौ ग्रहणस्तवौ ।

दण्डी, काव्यादर्श, 1/14–19

महाकाव्य साहित्य की वह महत्वपूर्ण विधा है जिसमें मानव जीवन की सर्वांगीण गतिविधियों का लेखा–जोखा विद्यमान रहता है । महाकाव्यों में महापुरुषों की महान् घटनाओं के चित्रण द्वारा कवि समाज का पथ प्रदर्शन करता है। महाकाव्यों की उदात्त एवं नैतिक राष्ट्रीय चेतना, इन्हें समाज–शास्त्रीय मूल्यों से जोड़ देती है। महाकाव्य का लेखक एवं नायक अपने से पूर्व पुरुषों के आदर्शों का पालन करता हुआ एक सन्देशवाहक के रूप में जन साधारण को सामाजिक मूल्यों, कर्त्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति सजग करता है।

आधुनिक महाकाव्य

अपने से पूर्ववर्ती साहित्यशास्त्री आचार्यो का अनुकरण करते हुए ''डॉ रसबिहारी द्विवेदी'' ने आधुनिक महाकाव्य के लक्षण बताए हैं कि–

सर्गैवृत्तैश्च बद्धं सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थ रम्यं

संवादैश्योच्चशिल्पैः सततरसमयं ग्रन्थिर्मुक्तं समृद्धम्।

पात्रं स्याद् यस्य मुख्यं परम गुणयुतं लोकविख्यातवृत्तम्।

भव्यं लोकस्वभावं महदपि महतां तन्महाकाव्यमास्ते ।।

सं.सा. डॉ. हरिनारायण दीक्षित

अर्थात् महाकाव्य सर्गबद्ध होता है। इसका विषय गम्भीर होता है। इसके आरम्भ में आशीर्वाद, नमस्कार तथा वस्तु–निर्देश होता है। इसका नायक महान और धीरोदात्तादि गुणों से युक्त होता है । इसमें चतुर्वर्ग फलप्राप्ति का प्रतिपादन तथा सभी रसों का पृथक् निरूपण होना चाहिए । महाकाव्य में नगर, अर्णव, शैल, चन्द्र, सूर्योदय, उद्यान, उत्सव, ऋतु, क्रीड़ा, विवाह, विजय, मन्त्र, दूत, प्रयाण आदि वर्णन भी अपेक्षित है। सर्ग अधिक विस्तृत न हो तो तथा कथावस्तु पंच नाट्य सन्धियों से युक्त हो।

चयनित नारी प्रधान महाकाव्य

साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में साहित्यकारों ने नारी को प्रधान पात्र के रूप में चित्रित कर अनेक नारी–प्रधान रचनाओं की रचना की है। महाकाव्यों में नारी को प्रधान पात्र के रूप में चित्रित कर अनेक नारी प्रधान महाकाव्य लिखे गए हैं। कुमार दास के समय के आस–पास ही नारी प्रधान संस्कृत महाकाव्यों की परम्परा का पता चलता है। कुमारदास का स्थितिकाल अब तक प्रमाणिक रूप में सिद्ध न हो सकने के कारण उन्हें महाकवि माघ के आस–पास रखा जा सकता है । इन्होंने 20 सर्गात्मक नारी प्रधान ''जानकीहरणम्'' नामक महाकाव्य की रचना की थी । 9वीं शताब्दी में अभिनन्द का ''कादम्बरीकथासार'' महाकाव्य मिलता है, जिसमें 8 सर्ग हैं।

20वीं सदी में स्वतन्त्रता के बाद अनेक नारी प्रधान संस्कृत महाकाव्यों की रचना की गई है । इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए 21वीं सदी में भी अब तक अनेक नारी प्रधान महाकाव्यों की प्राप्ति होती है।

नाम	**लेखक**	**प्रकाशन वर्ष**
1. अपराजितावधुः	श्री पूर्णचन्द्र शास्त्री	2000
2. श्रीकरणीचरितामृतम्	महावीर प्रसाद सारस्वत	2001
3. राजलक्ष्मी स्वयंवरम्	पं. श्री रामदुबे	2001
4. विद्योत्तमा कालिदासीयम्	रामकिशोर मिश्र	2006
5. जानकी जीवनम्	डॉ. दशरथ द्विवेदी	2006
6. उत्तरसीताचरितम्	श्री रेवाप्रसाद द्विवेदी	
7. राधाचरितम्	डॉ. हरिनारायण दीक्षित	2005

नारी सशक्तीकरण

सशक्तीकरण का पहला आयाम है–आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान और इसी पर आधारित है समाज में सम्मानजनक स्थान। महिलाओं को जागरुक व साहसी बनाने में दो तत्व सबसे अधिक सार्थक भूमिका निभा सकते हैं–शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन ये दोनों तत्व न केवल महिलाओं में स्वाभिमान ओर आत्मविश्वास पैदा करते हैं बल्कि उन्हें हर दृष्टि से सशक्त और अधिकार सम्पन्न बनाने में भी सहायक है। सशक्तीकरण का अर्थ है कि महिलाएं निर्णय ले, उसे अमल में लाएं और सामाजिक स्वीकृति दिलाएं, समाज के विभिन्न वर्गो तक पहुॅचाए, संगठन तैयार करें जो इन विचारों, मूल्यों को लोगों तक पहुँचाऐ। स्त्री के लिए यह भी जरूरी है कि जीवन पर स्वयं का नियन्त्रण हो, वह पिता, पति व बेटे के नियन्त्रण में नहीं है। यह भाव होना चाहिए कि किसी भी काम में उसकी भागीदारी बराबर की है।

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही नारियों का सम्मान होता रहा है। हमने महिलाओं को देवी का स्वरूप माना है। ऋग्वैदिक काल में कई वैदिक ऋषिकाएं (विदुषी) हुई हैं जैसे, अपाला, घोषा,

लोपामुद्रा एवं दर्शन के क्षेत्र में गार्गी आदि। इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिकाएं निभायी थी । अथर्ववेद के भूमि सूक्त में पहली बार पृथ्वी को माता कहा गया है

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।। अथर्ववेद, भूमि सूक्त–1/12

अर्थात् भूमि माता है और मैं उसका पुत्र हूँ ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । –मनुस्मृति 3.56

अर्थात् जहां नारी को पूजनीय समझा जाता है वहां देवता निवास करते हैं।

पिता रक्षति कौमारे, भर्त्ता रक्षति यौवने ।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्रमर्हति । – मनुस्मृति 5.241

अर्थात् पिता उसकी बचपन में रक्षा करते हैं, पति उसकी यौवन में रक्षा करता है, तथा बुढ़ापे में पुत्र उसकी रक्षा करता है । इस तरह नारी को कभी स्वतन्त्र नहीं छोड़ा। अतः मनु की आचार संहिता के अनुसार शैशवकाल में पिता, युवावस्था में पति के तथा वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना ही नारी की नियति बन गई तथा स्वतन्त्र होकर न रहने के प्रति उसे सचेत कर दिया गया है।

महाभारत काल में नारी विद्रोह का स्वर द्रोपदी के माध्यम से फूटता है यह स्वर नारी पर होने वाले अन्याय का प्रतिकार करता है। महाभारत के सभा पर्व में जब युधिष्ठिर द्रोपदी को जुए में हार जाते हैं तो वहां भरी सभा में युधिष्ठिर से द्रोपदी प्रश्न करती है–क्या नारी को जुए में दांव पर लगाया जा सकता है? आपने किस अधिकार से मुझे दांव पर लगाया है?

इस प्रकार द्रोपदी मुखर होकर उसका प्रतिकार करती है अतः द्रोपदी नारी समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली पहली नारी है। वह भरी सभा में सबसे न्याय मांगती है। उसका विद्रोही स्वर गूँजता है।

समाज में नारियों का शोषण प्राचीन काल में भी था जो आज चरम सीमा पर पहुँच गया है।

वाल्मीकि का उद्घोष है कि महान् लोग स्त्री पर अत्याचार नहीं करते–

नहि स्त्रीषु महात्मानः क्वचित्कुर्वन्ति दारुणम् ।। (किष्किन्धा काण्ड 33/36)

रामायण के समान ही महाभारत में भी स्त्रियों को घर की लक्ष्मी कहा गया है। उन्हें पूजनीया, पवित्र और घर की दीप्ति तक बताया गया है।

''पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः ।

स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद् रक्ष्या विशेषतः।।'' उद्योग पर्व 36/22

इतना ही नहीं विषम परिस्थितियों में भी स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा की बात कही गई है –

न भागं कल्पयेत्स्त्रीषु देव राजधनेषु। – कौटिल्य अर्थशास्त्र पृ0256

अर्थात् विषम परिस्थितियों में भी स्त्रीधन, राजधन एवं देवधन को हस्तगत नहीं किया जा सकता है।

छठी शताब्दी में हुए ''बृहत्संहिताकार'' वराहमिहिर का नाम विशेष रूप से नारी समर्थक विचारों में महत्वपूर्ण है–

प्रबूतं सत्यं कतरोऽगंनानां दोषोऽस्ति यो नाचरितो मनुष्यैः। बृहत्संहिता – 74.6

इनका कथन है कि जो दोष स्त्रियों के बताए जाते हैं, वे पुरुषों में भी विद्यमान है।''

वस्तुतः भारतीय परिवेश में विशुद्ध सामाजिक धरातल पर नारी समर्थक विचारक न तो कोई आन्दोलन ही दे पाए, जिससे नारी जाति पर होने वाले अत्याचारों का प्रतिरोध किया जा सके और ना ही नारी समाज संगठित होकर इतना साहस जुटा पाया कि वह अपने छीने हुए मौलिक अधिकारों को पुनः प्राप्त कर सके। शायद नारी समाज की यही सबसे बड़ी कमजोरी रही होगी कि अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले उसे अपने पिता, पति, पुत्रों से ही संघर्ष करने की आवश्यकता थी जिसके प्रति वह ना तो सचेत थी और ना ही कभी ऐसा करना उचित समझती थी। वराहमिहिर, कालिदास, भवभूति आदि अनेक विचारकों ने नारी की इस विवशता को पहचाना है तथा उसकी विवशता और कर्त्तव्यपरायणता के प्रति हार्दिक संवेदनाएं भी प्रकट की है। आज आवश्यकता है कि एक ऐसे साहित्य की जो इस धरती पर पनपने वाली विसंगतियों पर प्रहार कर सके।

युगों–युगों से नारी की पहचान माँ–बहन–बेटी–पत्नी आदि के रूप में की जाती है। इन संज्ञाओं के आवरण में वह शोषित पीड़ित, भोग्या, दासी आदि विविध रूपों में अपना जीवन यापन करती

आयी है लेकिन आज की नारी पर आधुनिक शिक्षा विज्ञान विविध प्रकार के बने बनाये कानूनों/नियमों अधिकारों का प्रभाव पड़ा है तथा वह अपनी आत्मनिर्भरता और सुरक्षा के लिए प्रयत्न कर रही है। कानून एवं पुलिस प्रशासन के बल बूते पर नारी के साथ होने वाले अपराधों को नहीं रोका जा सकता, इसके लिए जन जागरण एवं जीवन मूल्यों को बदलने की आवश्यकता है।

इस प्रकार आज आपका परिचय यहॉ कुछ ऐसी ही समसामायिक कृतियों से करवा रही हूँ जो देशकाल की कुछ स्वाभाविक सीमाओं में परिबद्ध रहने के बाद भी संस्कृत महाकाव्यों में प्रतिबिम्बित सामाजिक चेतना, समग्र राष्ट्रीय स्तर पर जन मानस की आकांक्षाओं एवं भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए जंगल स्थावर जगत् के योग क्षेम के लिए वर्तमान विसंगतियों पर प्रहार कर सकें।

उद्देश्य

1. महिलाओं के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
2. महिलाओं में आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास की भावना को विकसित करना।
3. देश की उन्नति के लिए नारी शक्ति का प्रयोग नारी, शिक्षा, महिला आरक्षण बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ भ्रूण हत्या पर रोक आदि।
4. वर्तमान समय में डिजीटल इण्डिया के सपने को पूरा करने में शिक्षित महिलाओं की भागीदारी।
5. महिलाओं को उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति सजग करना।
6. महिला उत्पीड़न एवं अपराधों के प्रति जागरूकता।
7. साहित्यिक क्षेत्र में भी महिलाओं के योगदान पर बल।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

1. महाकाव्य श्रव्य काव्य के अन्तर्गत आने वाले प्रबन्ध काव्य का प्रथम भेद है। अतः अनेक शोधार्थियों ने महाकाव्य को अपना शोध विषय बनाकर कार्य किए हैं यथा–
2. डॉ. उर्मिला आनन्द के निर्देशन में आरती पुन्ढीर द्वारा ''21वीं शताब्दी के महाकाव्यों में धर्म, दर्शन एवं समाज'' का अध्ययन दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीटयूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)।
3. डॉ. अगम कुलश्रेष्ठ के निर्देशन में प्रीति गुप्ता द्वारा ''आर्ष महाकाव्यों में मानवाधिकार'' का अध्ययन किया गया है। दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीटयूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)।
4. डॉ. आर.एस. शर्मा के निर्देशन में इन्दू प्रभा द्वारा ''प्रमुख संस्कृत महाकाव्यों में श्रीकृष्ण चरित एक अध्ययन'' का अध्ययन किया गया है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

डॉ. राजकुमार जैन के निर्देशन में शारदा गोयल द्वारा ''आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन'' पर कार्य किया गया है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

अतः विषय का चयन करने से पूर्व जानकारी के लिए मैने विविध विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों, शोध प्रबन्ध, इन्टरनेट आदि का गहन अन्वेषण किया, किन्तु अध्येय, महाकाव्यों में नारी–सशक्तीकरण को लेकर कोई कार्य मेरे संज्ञान में नहीं आया है इसलिए मैंने ''चयनित महाकाव्यों में नारी–सशक्तीकरण'' को अपने शोध कार्य के विषय के रूप में चयन किया है।

शोध दृष्टि

1. शोध में महाकाव्य के स्वरूप का निर्धारण करते हुए संस्कृत महाकाव्य एवं परम्परा तथा आधुनिक संस्कृत महाकाव्य एवं परम्परा का निरूपण करना।
2. आधुनिक संस्कृत महाकाव्य एवं महाकाव्यकारों का ज्ञान प्राप्त करना।
3. आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों का तकनीकी एवं व्यावहारिक दृष्टि से विवेचन करना।
4. नारी सशक्तीकरण की दृष्टि से आधुनिक महाकाव्यों की व्याख्या करना।

5. आधुनिक महाकाव्यों में नारी को प्रधान/मुख्य पात्र के रूप में चित्रित करना।

6. शोधकार्य की उपादेयता का वर्णन करना।

7. शोधकार्य के लिए सहायक ग्रन्थ सूची का विवरण देना ।

शोध प्रविधि

इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए व्याख्यात्मक विश्लेषणात्मक एवं आगमनात्मक प्रविधियों का प्रयोग करते हुए मैं अपने शोध कार्य को करूँगी, जिसमें अध्येय चयनित महाकाव्यों में नारी सशक्तीकरण का विश्लेषण किया जायेगा।

शोध का पूर्व अध्ययन

सामग्री के रूप में मूल अध्येय महाकाव्यों ग्रन्थालयों में उपलब्ध सन्दर्भ ग्रन्थ, आलोचनात्मक ग्रन्थ, विश्वकोश, शब्दकोश एवं शोध–पत्रिकाओं का अध्ययन किया जायेगा। इसके साथ–साथ इन्टरनेट ई–लाइब्रेरी, ई–बुक्स, ई–गूगल आदि के माध्यम से प्राप्त सामग्री का भी अध्ययन किया जायेगा। अतः मेरा विश्वास है कि इस शोध कार्य के द्वारा मैं नारी सशक्तीकरण पर सफलतापूर्वक विचार–विमर्श कर सकूंगी । आशा है कि आप सब (विद्वद) विज्ञजन मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान कर मेरा मार्गदर्शन करेंगे ।

चयनित महाकाव्यों में नारी सशक्तीकरण का अध्ययन

प्रथम अध्याय – चयनित महाकाव्य–पृष्ठभूमि एवं स्वरूप

1. प्राच्य एवं आद्य महाकाव्य

2. संस्कृत महाकाव्यों की विशेषताएं

3. नारी –सशक्तीकरण का अर्थ एवं परिभाषा

द्वितीय अध्याय – अध्येय चयनित महाकाव्यों की पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रभाव

1. अध्येय संस्कृत महाकाव्यों का परिचय
2. अध्येय संस्कृत महाकाव्य एवं युगीन प्रभाव

तृतीय अध्याय – अध्येय महाकाव्यों का सांस्कृतिक अध्ययन

1. सामाजिक अध्ययन
2. राजनैतिक अध्ययन
3. धार्मिक अध्ययन
4. आर्थिक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय–अध्येय महाकाव्यों में नारी सम्बन्धित अधिकारी

1. मौलिक अधिकार
2. परिवर्तित अधिकार

पंचम अध्याय – अध्येय महाकाव्यों में नारी सशक्तीकरण

1. अध्येय महाकाव्यों में वर्णित नारी सशक्तीकरण का समाज को प्रदेय
2. अध्येय महाकाव्यों की प्रासंगिकता

षष्ठ अध्याय– अध्येय महाकाव्यों का काव्यगत अध्ययन

1. भाषा, छन्द, अलंकार
2. रसाभिव्यंजना, शब्द शक्तियाँ
3. सूक्ति वचन

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मूल ग्रन्थ

1. अपराजिता वधु पूर्णचन्द्र शास्त्री (2000) – प्रतिभा प्रकाशन 21/5 नई दिल्ली।
2. श्री करणीचरितामृतम्, महावीर प्रसाद सारस्वत (2001)–जगन्नाथ प्रकाशन, बीकानेर (राज0)
3. विद्योत्तमाकालिदासीयम् रामकिशोर मिश्र (2006) – खेकड़ा मेरठ, उत्तर प्रदेश।
4. राजलक्ष्मी स्वयंवरम् पं. श्रीरामदुबे (2001) – हंसा प्रकाशन पाण्डुपोल बाजार, जयपुर
5. जानकी जीवनम्, डॉ. दशरथ द्विवेदी (2006)– राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. उत्तरसीताचरितम् श्री रेवाप्रसाद द्विवेदी – राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली।
7. राधाचरितम् श्री हरिनारायण दीक्षित (2005)–ईस्टर्न बुक लिंकर्स 5825, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली–110007

सहायक ग्रन्थ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास डॉ. कमल नारायण टंडन, (2005), प्रकाशक बीके. तनेजा, क्लासिकल पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली–110015
2. संस्कृत वाड्मय का वृहद् इतिहास (सप्तम खण्ड) पद्म भूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय – उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
3. संस्कृत साहित्य परिचय डॉ. राधा बल्लभ त्रिपाठी (1998) प्रतिभा प्रकाशन 29/5 शक्ति नगर, दिल्ली–110007
4. साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी परिकल्पना डॉ. विनय मोहन त्रिपाठी (2007) नमन प्रकाशन 4231/1 अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
5. तुलसी साहित्य में नारी डॉ. शारदा त्यागी (2002) – ईशान प्रकाशन, 17 शिवपुरी, मेरठ 250001
6. क्या अपराध है औरत होना ? चन्द्र सिंह चेतन (2009) – ग्रन्थ विकास सी 37 राजापार्क, आदर्श नगर, जयपुर ।

अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

1. शोध पत्रिका
2- वाक् सुधा संस्कृत वाड्मय में स्त्री सशक्तीकरण (2015) -IISSN : 2347-6605 Page 54
3- Shodhganga.inflinbnet.ac.in 03 Preface.

शब्द कोश

1. पारिजात कोश, डॉ. ईश्वरचन्द्र शर्मा, परिचय पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2004
2. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली 1966, 1969